छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʻसमए वट्टमाणम्मि उक्कस्सदव्वुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, कम्मट्ठिदिचरिमसमय-गुणिदंकम्मंसियं मोत्तूण अण्णत्थ सव्वत्थाणुक्कस्सदव्वुवलंभादो । सिया जहण्णा, खविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमए जहण्णदव्वुवलंभादो । सिया अजहण्णा, सुध्द-णयखविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमयं मोत्तूण अण्णत्थ अजहण्णदव्वुवलंभादो । सिया सादिया उक्कस्सादिपदाणमेगसरुवेण अवट्ठाणाभावादो । कधं दव्वट्ठियणए उक्कस्सादिपदविसेसाणं संभवो ? ण, णइकगमे णइगमे सामण्णविसेससंभवं पडि विरोहाभावादो । सिया अणादिया, जीवकम्माणं बंधसामण्णस्स आदित्त (प्रतिषु 'अदित्त' इति पाठः।) विरो-हादो । सिया धुवा अभविएसु अभवियसमाण (अप्रतौ 'समाणाभविएसु' इति पाठः।) भविएसु च णाणावरणसामण्णस्स वोच्छेदाभावादो । सिया अध्दुवा, केवलिम्हि णाणावरणवोच्छेदुवलंभादो चदुण्णं पदाणं सासदभावेण अवट्ठाणाभावादो वा । सिया जुम्मा । जुम्मं सममिदिएयट्ठो । तं दुविहं कद--बादरजुम्मभेएण । तत्थ जो रासी चदुहि अवहिरिज्जदि सो कदजुम्मो (चतुष्केण हियमाणश्चतु शेषो हि यो भवेत् । अभावाद् भागशेषस्य संख्यातः कृतयुग्मकः।। १।। xxx चतुष्केण हियमाणस्त्रिशेषस्त्रोज उच्यते । द्विशेषो द्वापरयुग्मः कल्योजश्चैकशेषकः ।। २ ।। xxx तथा च भगवतीसूत्रे---गो ० ! जे णं रासी चउक्केणं अवहारेणं अवहीरमाणे अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से णं कडजुम्मे, एवं तिपज्जवसिए तेओए, दुपज्जवसिए दावरजुग्मे, एगपज्जवसिए कालेओगे इति । लो. प्र. १२७६.) ˩

< नारकीके उत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है । स्यात् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, कर्मस्थितिके अन्तिम समयवर्ती गुणित कर्मांशिक नारकीको छोडकर अन्यत्र सर्वत्र अनुत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है । स्यात् जघन्य है, क्योंकि, क्षपितकर्माशिक जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य द्रव्य पाया जाता है । स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, शुध्द नयकी अपेक्षा क्षपित-कर्मांशिक जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयको छोडकर अन्यत्र अजघन्य द्रव्य पाया जाता है । स्यात् सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट आदि पदोंका एक रुपसे अवस्थान नहीं रहता । >

< शंका---द्रव्यार्थिक नयमें उत्कृष्ट आदि पदविशेष कैसे सम्भव है ? >

< समाधान---नहीं, क्योंकि, अनेकको विषय करनेवाले नैगम नयमें सामान्य और विशेष दोनों सम्भव हैं, इसमें कोई विरोध नहीं आता । >

< स्यात् अनादि है, क्योंकि, जीव और कर्मके बन्धसामान्यको सादि माननेमें विरोध आता है । स्यात् ध्रुव है, क्योंकि, अभव्यों और अभव्य समान भव्योंमें ज्ञानावरण-सामान्यका विनाश नहीं होता । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, केवलीमें ज्ञानावरणका व्युच्छेद पाया जाता है, अथवा उक्त चार पदोंका शाश्वत रुपसे अवस्थान नहीं रहता । स्यात् युग्म है । युग्म और सम ये एकार्थवाचक शब्द हैं । वह कृतयुग्म और बादरयुग्मके भेदसे दो प्रकारका है । उनमेंसे जो राशि चारसे अवहृत होती है वह कृतयुग्म कहलाती है । जिस >

'जो रासी चदुहि अवहिरिज्जमाणो दोरुवग्गो होदि सो बादरजुम्मं । जो एगग्गो (प्रतिषु योगग्गो इति पाठः ।) सो कलियोजो । जो तिगग्गो सो तेजोजो (द्रव्यप्रमाण पृ.२४९.) । उत्तं च -

< चोद्दस बादरजुम्मं सोलस कदजुम्ममेत्त (प्रतिषु 'मेत्थ' इति पाठः ।) कलियोजो । >

< तेरस तेजोजो खलु पण्णरसेवं खु विण्णेया ।। ३ ।। >

'तदो णाणावरणम्हि समदव्वसंभवादो जुम्मत्तं घडदे । सिया ओजा, कत्थ वि तत्थ विसमसंखदव्वुवलंभादो । सिया ओमा, कयाइं परुवणाण (प्रतिषु 'कयाहं पदेसाणमव'- इति पाठः ।) मवचयदंसणादो । सिया विसिट्ठा, कयाइं (प्रतिषु अ-प्रतौ 'कदाचि' इति पाठः ।) वयादो अहियायदंसणादो । सिया णोमणोविसिट्ठा (मप्रतौ 'सिया म णोमणोविसिट्ठा' इति पाठः ।), पादेक्कं पदावयणे णिरुध्दे वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं पढमसुत्तपरुवणा कदा । १३ ।।

'संपहि विदियसुत्तत्थो वुच्चदे । तं जहा- उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खे तस्स अत्थित्तविरोहादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमसेसदव्ववियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो । सिया सादिया, अणु-

----

< राशिको चारसे अवहृत करनेपर दो रुप शेष रहते हैं वह बादरयुग्म कही जाती है । जिसको चारसे अवहृत करनेपर एक अंश शेष रहता है वह कलिओज राशि है । और जिसको चारसे अवहृत करनेपर तीन अंक शेष रहते हैं वह तेजोज राशि है । कहा भी है--- >

< यहां चौदहको बादरयुग्म, सोलहको कृतयुग्म, तेरहको कलिओज और पन्द्रहको तेजोज राशि जानना चाहिये ।। ३ ।। >

< इसलिये ज्ञानावरणमें समान द्रव्यकी सम्भावना होनेसे युग्मत्व घटित होता है । स्यात् ओज रुप है, क्योंकि, कहींपर उसमें विषम संख्या युक्त द्रव्य पाया जाता है । स्यात् ओम है, क्योंकि, कदाचित् प्रदेशोंका अपचय देखा जाता है । स्यात् विशिष्ट है, क्योंकि, कदाचित् व्ययकी अपेक्षा अधिक आय देखी जाती है । स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, प्रत्येक पदभेदकी विवक्षा होनेपर वृध्दि-हानि नहीं देखी जाती । इस प्रकार प्रथम सूत्रकी प्ररुपणा की ।१३।। >

< अब द्वितीयसूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है---- उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं होती, क्योंकि, अपने प्रतिपक्ष रुपसे उसका अस्तित्व माननेमें विरोध आता है । स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, अजघन्यमें जघन्यसे ऊपरके शेष सब द्रव्य-विकल्प सम्मिलित हैं, इसलिये उसमें उत्कृष्ट भी सम्भव है । स्यात् सादि है, क्योंकि, >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʻक्करस्सादो उक्स्सदव्वुप्पत्तीए । सिया अद्धुवा, उक्करस्सपदस्स (प्रतिषु - ‘पदस्स एदस्स’, मप्रतौ ‘पदस्स पदस्स’ इति पाठः।) सव्वकालमवट्ठाणा-भावादो । (सिया) तेजोजो, चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णिरुवावट्ठाणादो । (सिया) णोमणोविसिट्ठा, वड्ढिहाणीणं तत्थ विरोहादो । एवमुक्करस्सणाणावरणीय-वेयणा पंचपदप्पिया ।५ ।।

ʻअणुक्करस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्करस्सं मोत्तूण सेसहेट्ठिमासेस-वियप्पे अणुक्करस्से जहण्णस्स वि संभवादो । सिया अजहण्णा, अणुक्करस्सरस्स अजहण्णा-विणाभावित्तादो । सिया सादिया उक्करस्सादो अणुक्करस्सुप्पत्तीदो अणुक्करस्सादो वि अणुक्करस्सुप्पत्तिदंसणादो च । अणादिया ण होदिं, अणुक्करस्सपदविसेस- विवक्खादो । अणुक्करस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्करस्सादो अणुक्करस्सपदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो । ण च णिच्चणिगोदेसु वि अणादित्तं लब्भदि, तत्थाणुक्करस्सपदाणं पल्लट्टणेण सादित्तुवलंभादो । सिया अद्धुवा, अणु-क्करस्सेक्कपदविसेसरस्स सव्वदा अवट्ठाणाभावादो । सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसम्हि अवट्ठिदविसमसंखुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि

< अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट द्रव्यकी उत्पत्ति होती है । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, यह उत्कृष्ट पद सर्व काल अवस्थित नहीं रहता । स्यात् तेजोज है, क्योंकि, इसे चारसे अवहृत करनेपर तीन रुप अवस्थित नहीं रहते हैं । स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृध्दि और हानि मान-नेमें विरोध आता है । इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पांच पद रुप है । ५ । । >

< अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना स्यात् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्ट विकल्पको छोडकर अधस्तन शेष समस्त विकल्प रुप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है । स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाभावी है । स्यात् सादि है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्टकी उत्पत्ति होती है और अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टकी उत्पत्ति देखी जाती है । अनादि नहीं है, क्योंकि, यहां अनुत्कृष्ट रुप पदविशेषकी विवक्षा है । अनुत्कृष्ट-सामान्यकी विवक्षा होनेपर भी अनादि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदके होनेपर सादित्व देखा जाता है । यदि कहा जाय कि इस पदका नित्यनिगोदिया जीवोंमें अनादित्व प्राप्त हो जायगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, वहां अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे यह सादित्व पाया जाता है । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट रुप एक पद-विशेषका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता । स्यात् ओज है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे जितने भेद है उनमेंसे किसी भी पदविशेषमें विषम संख्याका सभ्दाव पाया जाता है । स्यात् युग्म है, >

ʻदुविहसमसंखदंसणादो । सिया ओमा, कत्थ वि हाणीदो समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलं-भादो । सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुवलंभादो । सिया णोमणोवि-सिट्ठा, अणुक्कस्सजहण्णम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा णवपदवियप्पा । ९ ।। एवं तदिय (प्रतिषु 'एवं कदिसुत्त'- इति पाठः।) सुत्तपरुवणा कदा ৴

ʻजहण्णा णाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण विसेसाभावादो । सिया सादिया, अजहण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए । सिया अध्दुवा, सासदभावेण अवट्ठाणाभावादो । सिया जुम्मा, चदुहि अवहिरिज्जमाणे अग्गाभावादो । सिया णोमणोविसिट्ठा, वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं जहण्णवेयणा पंचपयारा सरु-वेण छप्पयारा वा । ५ । (अ-सप्रत्योः 'वा । ६ ।' इति पाठः।) । एवं चउत्थसुत्तपरुवणा ৴

< क्योंकि, कहींपर दोनों प्रकारकी समसंख्या (ऐसी संख्या जिसे चारसे विभक्त करनेपर कुछ भी शेष न रहे या दो अंक शेष रहें) देखी जाती है । स्यात् ओम है, क्योंकि, कहींपर हानि होनेसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । स्यात् विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृध्दिके होनेसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट रुप जघन्य पदकी अथवा अनुत्कृष्ट रुप पदविशेषकी विवक्षा होनेपर वृध्दि और हानि नहीं होती । इस प्रकार ज्ञानावरण अनुत्कृष्ट वेदना नौ पद रुप है ।९ ।। इस प्रकार तृतीय सूत्रकी प्ररुपणा की । >

< जघन्य ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, सामान्य जघन्य पदसे अनुत्कृष्ट रुप जघन्य पदमें कोई अन्तर नहीं है । कथंचित् सादि है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है । कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, वह शाश्वत रुपसे नहीं पाया जाता । कथंचित् युग्म है, क्योंकि, उसे चारसे अवहृत करनेपर कोई अंक शेष नहीं रहता । कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृध्दि और हानि नहीं होती । इस प्रकार जघन्य वेदना पांच प्रकारकी है अथवा स्वपदके साथ छह प्रकारकी है ।५ ।। (आशय यह है कि जघन्य वेदना अन्य अजघन्य आदि रुप पदोंकी अपेक्षा पाच प्रकारकी है और इनमें जघन्य पदको जघन्य रुप मानकर मिला देनेपर वह छह प्रकारकी हो जाती है ।) इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररुपणा की । >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʿअजहण्णा णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्क-स्सादो पुध अणुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, तदविणाभावित्तादो । सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणाभावादो । सिया अद्धुवा । कारणं सुगमं । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा । सुगमं । सिया णोमणोवि-सिट्ठा, पदविसेसणिरोहादो । एवमजहण्णा णवभंगा दसभंगा वा ।९ ।। एसो पंचमसुत्तत्थो ।

ʿसादियणाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अध्दुवा । ण धुवा, सादिस्स धुवत्तविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवं सादियवेयणाए दस भंगा एक्कारस भंगा वा ।१० ।। एसो छट्ठसुत्तत्थो ।

‘अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । कधमणादियाए वेयणाए सादित्तं ?

< अजघन्य ज्ञानावरण वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, जब उत्कृष्ट पद अजघन्य रुपसे विवक्षित होता है तो वह ओघ उत्कृष्ट पदसे पृथक् नहीं पाया जाता । कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, वह उसका अविनाभावी है । कथंचित् सादि है, क्योंकि, परिवर्तन हुए विना अजघन्य पदविशेषोंका अवस्थान नहीं होता है । कथंचित् अध्रुव है । इसका कारण सुगम है । कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, और कथंचित् विशिष्ट है । इनका कारण सुगम है । कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है, क्योंकि जिसकी हानि-वृध्दि नहीं हुई ऐसे पदविशेषकी विवक्षा होनेसे यह विकल्प पाया जाता है । इस प्रकार अजघन्यके नौ अथवा दस भंग हैं । ९ ।। यह पांचवें सूत्रका अर्थ है । >

< सादि ज्ञानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथंचित् अध्रुव है । ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादिको ध्रुव माननेमें विरोध है । कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओन-नोविशिष्ट है । इस प्रकार सादि वेदनाके दस अथवा ग्यारह भंग हैं । १० । । यह छठे सूत्रका अर्थ है । >

< अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथंचित् सादि है । >

< शंका-अनादि वेदनामें सादित्व कैसे सम्भव है ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, जो वेदनासामान्यकी अपेक्षा अनादि है उसके उत्कृष्ट >

‘ण, वेयणासामण्णावेक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदावेक्खाए सादियत्तविरोहा-भावादो । सिया धुवा, वेयणासामण्णस्स विणासाभावादो । सिया अध्दुवा, पदविसे-सस्स विणासदंसणादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवमणादियवेयणाए बारसभंगा । १२ । तेरस भंगा वा । १३ । । एसो सत्तमसुत्तत्थो ’

‘धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवं धुवपदस्स बारस-भंगा तेरसभंगा वा । १२ । । १३ । । एसो अट्ठमसुत्तत्थो ’

ʻअध्दुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवमध्दुवपदस्स दस एक्कारस भंगा वा । १० । ११ । एसो णवमसुत्तत्थो ˩

ʻओजणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिय्र

< आदि पदोंकी अपेक्षा सादि होनेमें विरोध नहीं है । >

< कथंचित् ध्रुव है, क्योंकि, वेदनासामान्यका विनाश नहीं होता । कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है । कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि वेदनाके बारह भंग है । १२ । । अथवा तेरह भंग हैं । १३ । । यह सातवें सूत्रका अर्थ है । >

< ध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित अनादि है, कथंचित अध्रुव है, कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ध्रुव पदकेबारह अथवा तेरह भंग हैं । १२ । । १३ । यह आठवें सूत्रका अर्थ है । >

< अध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् ओज है, कथचित युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अध्रुव पदके दस अथवा ग्यारह भंग हैं । १० । । ११ । यह नौवें सूत्रका अर्थ है । >

< ओज ज्ञानावरणीयवेदनाका कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् >

ʻसादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एव-मोजस्स अट्ठ णव भंगा वा । ८ । । एसो दसमसुत्तत्थो ˩

ʻजुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवं जुम्मस्स अट्ठ णव भंगा वा । ८ । । एसो एक्कारसमसुत्तत्थो ˩

ʻओमणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवमोमपदस्स छ सत्त भंगा वा । ६ ।। एसो बारसमसुत्तत्थो ˩

ʻविसिट्ठणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं विसिट्ठपदस्स छ सत्त भंगा वा । ६ । । एसो तेरसमसुत्तत्थो ˩

ʻणोमणोविसिट्ठा णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,

----

< अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ओजके आठ अथवा नौ भंग हैं । ८ ।। यह दसवें सूत्रका अर्थ है । >

< युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्मके आठ अथवा नौ भंग हैं । ८ ।। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है । >

< ओम ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके छह अथवा सात भंग हैं । ६ ।। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है । >

< विशिष्ट ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके छह अथवा सात भंग है । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है । >

< नोओम-नोविशिष्ट ज्ञानावरण वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, >

ʻसिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अध्दुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवम-ट्ठभंगा । ८ ।। एसो चोद्दसमसुत्तत्थो । एदेसिं पदाणमंकविण्णासो- १३ । ५ । ९ । ५ । ९ । १० । १२ । १२ । १० । ८ । ८ । ६ । ६ । ८ । एत्थ गाहा-

< तेरस पण णव पण णव दस दोबारस दसट्ठ अट्ठेव । >

< छच्छक्कट्ठेव तहा सामण्णपदादिपदभंगा ।। ४ ।। >

ʻएवं सत्तण्णं कम्माणं ।। ४ ।।˩

ʻजहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं कायव्वा,

----

< कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार आठ भंग हैं । ८ । यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है । इन पदोंका अंकविन्यास- १३ ।५ ।९ ।५ ।९ ।१० ।१२ ।१२ ।१० ।८ ।८ ।६ ।६ ।८ । यहां गाथा- >

< तेरह, पांच, नौ, पांच, नौ, दस, दो बार बारह, दस, आठ, आठ, छह, छह, तथा आठ ये सामान्य पद आदिके पदभंग हैं ।। ४ ।। >

ʻइसी प्रकार सात कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पद होते हैं ।। ४ ।।ʼ

< जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी पदमीमांसा की है वैसे ही शेष सात कर्मोंकी करनी चाहिये, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है । >

< विशेषार्थ-पदमीमांसाका अर्थ है पदोंका विचार करना । जिसमें उत्कृष्ट आदि पदोंका विचार किया जाता है उसे पदमीमांसा अनुयोगद्वार कहते हैं । प्रकृतमें मुख्यतया ज्ञानावरण कर्मकी अपेक्षा उत्कृष्ट आदि तेरह पदोंका विचार किया गया है । यद्यपि सूत्र- कारने कुल उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य इन चार पदोंका ही निर्देश किया है; पर देशामर्षक भावसे इनके अतिरिक्त सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, ओज, युग्म, ओम, विशिष्ट और नोओम-नोविशिष्ट, ये नौ पद और लिये गये हैं; इस प्रकार कुल तेरह पद मिलाकर इनका ज्ञानावरण कर्मद्रव्यकी अपेक्षा विचार किया गया है । सर्वप्रथम तो यह बतलाया गया है कि ज्ञानावरण कर्ममें ये तेरह पद कैसे घटित होते हैं । फिर इसके बाद ज्ञानावरण कर्मको उत्कृष्ट आदि पदोंमेंसे एक एक रुप स्वीकार करके उसमें अन्य पद कहां कितने सम्भव हैं, यह बतलाया गया है और इस प्रकार इतने विवेचनके बाद अन्य सात कर्मोंकी भी इसी प्रकार प्ररुपणा करनेकी सूचना करके पदमीमांसा प्रकरण समाप्त किया गया है । अब आगे इन्हीं विशेषताओंको कोष्टक द्वारा बतलाया जाता है- >

ʻविसेसाभावादो । एवं अंतोखित्तओजाणुयोगद्दारा पदमीमांसा समत्ता ।ʼ

ʻसामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।। ५ ।।ʼ

ज्ञानावरण

पद	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट	जघन्य	अजघन्य	सादि	अनादि	ध्रुव	अध्रुव	ओज	युग्म	ओम	विशिष्ट	नोओम
उत्कृष्ट	"	x	x	"	"	x	x	"	"	x	x	x	"
अनु.	x	"	"	"	"	x	x	"	"	"	"	"	"
जघन्य	x	"	"	x	"	x	x	"	x	"	x	x	"
अजघन्	"	"	x	"	"	x	x	"	"	"	"	"	"
य	"	"	"	"	"	x	x	"	"	"	"	"	"
सादि	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
अनादि	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
ध्रुव	"	"	"	"	"	x	x	"	"	"	"	"	"
अध्रुव	"	"	x	"	"	x	x	"	"	x	"	"	"
ओज	x	"	"	"	"	x	x	"	x	"	"	"	"
युग्म	x	"	x	"	"	x	x	"	"	"	"	x	x
ओम	x	"	x	"	"	x	x	"	"	"	x	"	x
विशिष्ट	"	"	"	"	"	x	x	"	"	"	x	x	"
नोओ.													

< ज्ञानावरणके उत्कृष्ट आदि पदोंमें उनके ये अवान्तर पद जिस प्रकार बतलाये हैं उसी प्रकार शेष सात कर्मोंमें भी घटित कर लेना चाहिये । सामान्य पद सर्वत्र तेरह ही हैं, इसलिये उनका अलगसे कोष्टक नहीं दिया है । >

< इस प्रकार ओजानुथोगद्वारगर्भित पदमीमांसा समाप्त हुई । >

स्वामित्व दो प्रकारका है- जघन्य पद रुप और उत्कृष्ट पद रुप ।। ५ ।।

वेयणामहाहियारे दव्वविहाणे सामित्तं

पदे इदि ण एसा सत्तमी विहत्ती, किंतु पढमा चेव आदिट्ठेयारा (अ-आप्रत्योः 'अदिट्ठेयारा' इति पाठः ।)। पदसद्दो ठाणवाचओ घेत्तव्वो । जहण्णं पदं जस्स सामित्तस्स तं जहण्णपदं । उक्कस्सं पदं जस्स सामित्तस्स तमुक्कस्सपदं । ण च जहण्णुक्कस्ससामित्तेहिंतो वदिरित्तमण्णं सामित्तमत्थि, अणुवलंभादो ।

अजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वाणं सामित्तेण सह चउव्विहं सामित्तं किण्ण वुच्चदे ? ण, अजहण्णअणुक्कस्सदव्वसामित्ते भण्णमाणे वि जहण्णु-क्कस्सविहाणं मोत्तूणण्णेण पयारेण सामित्तपरुवणाणुववत्तीदो । तम्हा दुविहं चेव सामित्तमिदि उत्तं । अधवा जहण्णपदे उक्कस्सपदे इदि सत्तमीणिद्देसो । तेण जहण्णपदे एगं सामित्तं उक्कस्सपदे अवरं सामित्तं, एवं दुविहं चेव सामित्तमिदि वत्तव्वं ।

‘सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया कस्स ? ।। ६ ।।

< ‘पदे’ यह सप्तमी विभक्ति नहीं है, किंतु प्रथमा विभक्ति ही है; क्योंकि इसमें एकारका आदेश हो जानेसे ‘पदे’ यह रुप हो गया है । यहां पद शब्द स्थानका वाचक लेना चाहिये । ‘जिस स्वामित्वका’ जघन्य पद है वह जघन्यपद कहलाता है, और जिस स्वामित्वका उत्कृष्ट पद है वह उत्कृष्टपद कहलाता है । और जघन्य व उत्कृष्ट स्वामित्वको छोडकर दूसरा कोई स्वामित्व है नहीं, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता । >

< शंका-अजघन्य और अनुत्कृष्ट द्रव्यके स्वामित्वके साथ चार प्रकारका स्वामित्व क्यों नहीं कहते ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि अजघन्य और अनुत्कृष्ट द्रव्यके स्वामित्वका कथन करनेपर भी जघन्य और उत्कृष्ट विधानको छोडकर अन्य प्रकारसे स्वामित्वकी प्ररुपणा नहीं बनती । इस कारण सूत्रमें ‘दो प्रकारका ही स्वामित्व है’ ऐसा कहा है । अथवा, ‘जहण्णपदे उक्कस्सपदे’ यह सप्तमी विभक्तिका निर्देश है । इसलिये जघन्य पदमें एक स्वामित्व है और उत्कृष्ट पदमें दूसरा स्वामित्व है, इस तरह दो प्रकारका ही स्वामित्व है; ऐसा सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये । >

‘अब स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदका प्रकरण है । ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे उत्कृष्ट किसके होती है ? ।। ६ ।।

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘उक्कस्सपदे जं ट्ठियं सामित्तं तेण अणुगमं णाणावरणीयस्स कस्सामो-णाणावर-णीयवेयणावयणं सेसवेयणापडिसेहफलं । दव्वदो त्ति णिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो । उक्कस्सणिद्देसो जहण्णादिपडिसेहफलो । एदमासंकियसुत्तं, पुच्छाए कारणाभावादो ।

´जो जीवो बादरपुढवीजीवेसु बेसागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो (जो बाघरतसकालेणूणं कम्मट्ठिइं दु पुढवीए । बाघर (रि) पज्जत्तापज्जत्तगदीहेयरध्दासु ।। जोग-कसाउक्कोसो बहुसो णिच्चभवि-आउबंधं च । जोगजहण्णेणुवरिल्लट्ठिइनिसेगं बहुं किच्चा ।। कर्मप्रकृति २, ७४-७५.)।। ७ ।÷

´जीवो चेव उक्कस्सदव्वसामी होदि त्ति कधं णव्वदे ? ण, मिच्छत्तासंजम-कसायजोगाणं-कम्मासवाणमण्णत्थाभावादो । तेण जो जीवो त्ति जीवो विसेसियं कदो । उवरि उच्चमाणाणि सव्वाणि विसेसणाणि । बादरपुढवी दुविहा जीवाजीवभेएण । तत्थ बादरपुढवीजीवेसु अंतोमुहुत्तूणतसठिदीए (प्रतिषु 'अंतोमुहुत्तूणतस्सठिदीए' इति पाठः ।) ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदे जीवो सो उक्कस्सदव्वसामी होदि । कुदो ? सुहुमेइंदिय-जोगादो बादरेइंदियजोगस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । आउकाइय÷

< उत्कृष्टपदमें जो स्वामित्व स्थित है उसकेसाथ ज्ञानावरणका अनुगम करते हैं- ' ज्ञानावरणीयवेदना' इस वचनका फल शेष वेदनाओंका प्रतिषेध करना है । द्रव्यसे इस निदेशका फल क्षेत्रादिका प्रतिषेध करना है । 'उत्कृष्ट' पदकेनिदेशका फल जघन्य आदिका प्रतिषेध करना है । यह आशंकासूत्र है, क्योंकि, यहां पृच्छाका कोई कारण नहीं है । >

´जो जीव बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें कुछ अधिक दो हजार सागरोपमसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा हो ।। ७ ।÷

< शंका---जीव ही उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है यह कैसे जाना जाता है । >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग रुप कर्मोकेआस्त्रव अन्यत्र नहीं पाये जाते । इसलिये 'जो जीव' इस प्रकार जीवको विशेष्य किया है और आगे कहे जानेवाले सब इसकेविशेषण हैं । >

< बादर पृथिवी जीव और अजीवकेभेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे बादर पृथिवी-कायिक जीवोंमें अन्तर्मुहूर्त कम त्रसस्थितिसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण काल तक जो जीव रहा है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकेयोगसे बादर एकेन्द्रियोंका योग असंख्यातगुणा पाया जाता है । >

‘आदिबादरजीवे परिहरिदूण बादरपुढवीकाइएसु चेव किमट्ठं हिंडाविदो ? ण, उववादएयंताणुवड्ढिजोगे परिहरिदूण पुढवीकाइएसु देसूणबावीसवाससहस्साणि परिणामजोगेहि सह पाएण अवट्ठाणुवलंभादो । दसवाससहस्सेहिंतो अहियाउअपुढ-वीकाइएसु बहुवारं हिंडाविय तत्थुप्पत्तीए संभवाभावे सत्त-तिण्णि-दसवाससहस्साउअ आउ (प्रतिषु-‘सहस्साउआ-आउ’ इति पाठः।) काइय-वाउकाइय-वणप्फदिकाइएसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, तेसिं पज्जत्ता-पज्जत्तजोगादो पुढवीकाइयपज्जत्तापज्जत्तजोगस्स असंखेज्जगुणत्तादो । तं कुदो णव्वदे ? बादरपुढवीकाइएसु चेव अच्छिदो त्ति णियमण्णहाणुववत्तीदो । अहवा पहाणणिद्देसोयं तेण अण्णत्थ वि समयाविरोहेणच्छिदो त्ति दट्ठव्वं । बादरपुढविकाइएसु-

----

< शंका-अपकायिक आदि बादर जीवोंका परिहार करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें ही किसलिये घुमाया है ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, उपपाद और एकान्तानुवृध्दि योगोंको छोडकर पृथिवी-कायिकोंमें कुछ कम बाईस हजार वर्ष तक परिणामयोगोंके साथ प्राय: अवस्थान पाया जाता है । आशय यह है कि अन्य एकेन्द्रिय कायवालोंकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीवोंकी स्थिति अधिक होती है, इसलिये वहां अधिक काल तक परिणाम योग सम्भव है । इसीसे इस जीवको अन्य एकेन्द्रिय कायवालोंमें न घुमाकर पृथिवीकायिक जीवोंमें घुमाया है । >

< शंका-दस हजार वर्षोंसे अधिक आयुवाले पृथिवीकायिकोंमें बहुत बार घुमाकर जब वहां पुन: उत्पन्न कराना संभव न हो तब सात हजार, तीन हजार व दस हजार वर्षकी आयुवाले अप्कायिक, वायुकायिक व वनस्पतिकायिक जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, उनके पर्याप्त व अपर्याप्त योगसे पृथिवीकायिक जीवोंका पर्याप्त व अपर्याप्त योग असंख्यातगुणा है । >

< शंका-यह किस प्रमाणसे जाना ? >

< समाधान-‘बादर पृथिवीकायिकोंमें ही रहा’ यह नियम अन्यथा बन नहीं सकता, इससे जाना है कि अप्कायिकादिकोंके पर्याप्त व अपर्याप्त योगसे पृथिवीकायिकोंका पर्याप्त व अपर्याप्त योग असंख्यातगुणा होता है । अथवा यह प्रधान निर्देश है इसलिये अन्य जीवोंमें भी आगमाविरोधसे रहा ऐसा इस सूत्रका आशय समझना चाहिये । >

ʿसयलं कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, तसकाइएसु एइंदिएहिंतो असंखेज्जगुण-जोगाउएसु संकिलेसबहुलेसु हिंडाविय तत्तो असंखेज्जगुणदव्वसंचयस्स तत्थेवावट्ठि-दस्स अणुवलंभादो । जदि एवं तो तसकाइएसु चेव कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, सादिरेयबेसागरोवमसहस्सं मोत्तूण तत्थ तीससागरोवमकोडाकोडिकालमवट्ठाणा-भावादो । तसकाइएसु सगट्ठिदिकालब्भंतरे उक्कस्सदव्वसंचयं काऊण पुणो बादर-पुढवीकाइएसुप्पज्जिय तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो तसट्ठिदिं भमिय एइंदिएसुप्पा-इय एवं कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, तसट्ठिदिं समाणिय एइंदिएसु पविट्ठस्स तसेसु संचिददव्वमगालिय णिग्गमाभावादो । एदं कुदो णव्वदे ? तस-

----

< शंका-बादर पृथिवीकायिकोंमें सम्पूर्ण कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नही घुमाया ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, एकेन्द्रियोंसे त्रसोंका योग और आयु असंख्यातगुणी होती है और वे संक्लेश बहुत होते हैं इसलिये पृथिवीकायिकोंमें घुमानेके पश्चात त्रसोंमें घुमाया । यदि एकेन्द्रियोंनें ही रखते तो इनकी अपेक्षा त्रसोंमें जो असंख्यातगुणे द्रव्यका संचय होता है वह नहीं प्राप्त होता । यही कारण है कि सम्पूर्ण कर्मस्थिति प्रमाण काल तक एकेन्द्रियोंमें नहीं घुमाया है । >

< शंका-यदि ऐसा है तो त्रसकायिकोंमें ही कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नहीं घुमाया ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, वहां कुछ अधिक दो हजार सागरोपम काल तक ही अवस्थान हो सकता है; पूरे तीस कोडाकोडि सागरोपम काल तक अवस्थान नहीं हो सकता । >

< शंका-त्रसकायिकोंमें अपनी स्थिति प्रमाण कालके भीतर उत्कृष्ट द्रव्यका संचय करके पुन: बादर पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न होकर वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर फिर त्रसस्थिति काल तक त्रसोंमें भ्रमण करके एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न कराते । इस तरह कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नहीं घुमाया ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, त्रसस्थितिको पूर्ण करके जो जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते है उनका त्रसोंमें संचित हुए द्रव्यको विना गाले निकलना नहीं होता । >

< शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ? >

ʿट्ठिदीए ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो त्ति सुत्तणिद्देसादो । बादरपुढवीकाइएसु अच्छंतस्स परिणमणणियमपरुवणा उत्तरसुत्तेहि कीरदे-

ʿतत्थ य संसरमाणस्स बहुवा पज्जत्तभवा (प्रतिषु 'भावा' इति पाठः ।) थोवा अपज्जत्तभवा भवंति (क.प्र. २-७४.) ।। ८ ।।

ʿउप्पत्तिवारा भवाः, पज्जत्ताणं भवा पज्जत्तभवा, ते बहुआ । पज्जत्तेसुप्पण्णवारसलागाओ (अ-प्रतौ 'सगाओ' इति पाठः ।) बहुवा त्ति (प्रतिषु 'पज्जत्तेसु पण्णपारसगाउ बहुवा वि त्ति' इत्ति पाठः ।) वुत्तं होदि । के पेक्खिय बहुआ (अ-प्रतौ 'पेक्खियाण बहुआ' इति पाठः ।) पज्जत्तभवा ? खविदकम्मंसिय----खविद--गुणिद----घोलमाणपज्जत्तभवे । अपज्जत्तभवा थोवा । केहिंतो ? खविदकम्मंसिय---खविद--गुणिद---घोलमाण-

----

< समाधान--यह 'त्रसस्थितिसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा' सूत्रके इसी निर्देशसे जाना जाता है । >

< अब बादर पृथिवीकायिकोंमें रहनेवाले जीवके परिणमनके नियमोंकी प्ररुपणा आगेके सूत्रों द्वारा की जाती है- >

ʿवहां परिभ्रमण करनेवाले जीवके पर्याप्तभव बहुत और अपर्याप्तभव थोडे होते हैं ।। ८ ।।

< उत्पत्तिके वारोंका नाम भव है और 'पर्याप्तोंके भव पर्याप्तभव' कहलाते हैं । वे बहुत हैं । पर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकायें बहुत हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । >

< शंका-किनकी अपेक्षा पर्याप्तभव बहुत हैं ? >

< समाधान-क्षपितकर्मांशिक, क्षपित घोलमान और गुणित घोलमान जीवोंके पर्याप्तभवोंकी अपेक्षा गुणित कर्मांशिक जीवोंके पर्याप्त भव बहुत हैं । >

< अपर्याप्तभव थोडे हैं ? >

< शंका-किनसे थोडे हैं ? >

< समाधान-क्षपितकर्मांशिक क्षपित घोलमान और गुणित घोलमान जीवोंके अपर्याप्त भवोंसे थोडे हैं । >

ʻअपज्जत्तभवेहिंतो । गुणिदकम्मंसियस्स अपज्जत्तभवेहिंतो तस्सेव पज्जत्तभवा बहुगा त्ति किण्ण भण्णदे (अप्रतौ 'भणिदे' इति पाठः।) ? ण, बादरपुढवीकाइयअपज्जत्तभवसलागाहिंतो पज्जत्तभव---सलागाणं बहुत्तस्स अणुत्तसिध्दीदो । कुदो बहुत्तं णव्वदे ? बादरणिगोदपज्जत्ताणं भवट्ठिदी संखेज्जवस्ससहस्समेत्ता अपज्जत्ताणमंतोमुहुत्तमेत्ता त्ति कालाणुओगद्दार-सुत्तादो (कालाणुगम १५६)। सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद् भवति । ण चैतद्विशेषणमत्रा-र्थवत् व्यभिचाराभावात् । तदो पुव्विल्लो चेव अत्थो घेत्तव्वो । किमट्ठं पज्जत्तेसु (प्रतिषु 'पंडितेसु' इति पाठः।) चेव बहुसो उप्पादिदो ? अपज्जत्तजोगेहिंतो पज्जत्तजोगाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

< शंका-गुणितकर्मांशिकके अपर्याप्त भवोंसे उसके ही पर्याप्तभव बहुत हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, बादर पृथिवीकायिककी अपर्याप्त-भव-शलाकाओंसे-पर्याप्त-भव-शलाकायें बहुत हैं, यह विना कहे भी सिध्द है । >

< शंका-उनका बहुत्व किस प्रमाणसे जाना जाता है ? >

< समाधान-बादर निगोद पर्याप्तोंकी भवस्थिति संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है और अपर्याप्तोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र हैं इस कालानुयोगद्वारके सूत्रसे जाना जाता है । >

< व्यभिचारके होनेपर या उसकी सम्भावना होनेपर विशेषण प्रयोजनवाला होता है ऐसा नियम है । किन्तु यह विशेषण यहां प्रयोजनवाला नहीं है, क्योंकि, व्यभिचारका अभाव है । इस कारण पूर्वोक्त अर्थही ग्रहण करना चाहिये । >

< शंका-पर्याप्तोंमें ही बहुत बार क्यों उत्पन्न कराया ? >

< समाधान-चूंकि अपर्याप्तकोंके योगोंसे पर्याप्तकोंके योग असंख्यातगुणे पाये जाते हैं, अतः उन्हींमें बहुत बार उत्पन्न कराया है । >

< शंका-योगोंकी बहुलता क्यों अभीष्ट है ? >

< समाधान-नहीं, क्योंकि, योगसे प्रदेशोंकी अधिकता सिध्द होती है । >

ʻकिमट्ठं जोगबहुत्तमिच्छिज्जदे ? ण, जोगादो पदेसबहुत्तसिध्दीदो । तं पि कुदो ? जोगा पयडि-पदेसा त्ति सुत्तादो (गो.क. २५७.)।ʼ

ʻदीहाओ पज्जत्तध्दाओ रहस्साओ अपज्जत्तध्दाओ (क.प्र. २-७४.)।। ९ ।ʼ

ʻपज्जत्ताणमद्धाओ आउआणि (प्रतिषु ʻआउअणिʼ इति पाठः।) पज्जत्तध्दाओ, ताओ दीहाओ । कत्तो (अ-प्रतौ ʻत्तेध्दाʼ इति पाठः।) ? खविद-कम्मंसियखविद-गुणिद-घोलमाणपज्जत्तध्दाहिंतो । अपज्जत्तध्दाओ रहस्साओ । केहिंतो ? खविदकम्मंसिय-खविद-गुणिद-घोलमाणअपज्जत्तध्दाहिंतो । (प्रतिषु ʻकत्ताʼ इति पाठः।) पज्जत्तेसु-प्पज्जमाणो दीहाउएसु चेव उप्पज्जदि अपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणो अप्पाउएसु चेव उप्प-ज्जदि त्ति वुत्तं होदि । अपज्जत्तध्दाहिंतो सगपज्जत्तध्दाओ (अ-आ-स प्रतिषु ʻपज्जत्तीसुʼ इति पाठः ; काप्रतौ त्वत्र त्रुटितः पाठ ।) दीहाओ त्ति किण्ण भण्णदे ?

< शंका-वह भी किस प्रमाणसे सिध्द है ? >

< समाधान---ʻयोगसे प्रकृति और प्रदेश बन्ध होते हैंʼ इस सूत्रसे वह सिध्द है । >

ʻपर्याप्त काल दीर्घ और अपर्याप्त काल थोडे होते हैं ।। ९ ।ʼ

< पर्याप्तोंके काल अर्थात् आयु पर्याप्तकाल कहलाते हैं । वे दीर्घ हैं । >

< शंका---किनसे दीर्घ हैं ? >

< समाधान---क्षपितकर्मांशिक क्षपित घोलमान और गुणित घोलमान जीवोंके पर्याप्त-कालोंसे दीर्घ हैं । अपर्याप्तकाल थोडे हैं । >

< शंका--किनसे थोडे हैं ? >

< समाधान--क्षपितकर्मांशिक क्षपित घोलमान और गुणित घोलमान जीवोंके अप-र्याप्तकालोंसे थोडे हैं । >

< पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होता हुआ दीर्घ आयुवालोंमें ही उत्पन्न होता है और अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता हुआ अल्प आयुवालोंमें ही उत्पन्न होता है, यह उक्त सूत्रका अभिप्राय है । >

< शंका-अपर्याप्तकालोंसे अपना पर्याप्तकाल दीर्घ है, ऐसा क्यों नहीं कहते ? >

< समाधान--नहीं, क्योंकि, इस कथनमें कोई व्यभिचार न होनेसे उक्त विशेषणके>

ʻन व्यभिचाराभावेन विशेषणस्य वैफल्यप्रसंगात् ।ʼ

ʻएत्थेव सुत्तम्मि णिलीणस्स बिदियसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा- पज्जत्तएसु दीहाउएसु उप्पण्णस्स आउअभागा दो हवंति एगो पज्जत्तभागो अवरो अपज्जत्तभागो त्ति । तत्थ दीहाओ पज्जत्तध्दाओ त्ति उत्ते खविदकम्मंसिय-खविद-गुणिद-घोलमाण--पज्जत्तध्दाहिंतो गुणिदकम्मंसियपज्जत्तध्दाओ दीहाओ, तेसिमपज्जत्तध्दाहिंतो एदस्स अपज्जत्तध्दाओ रहस्साओ त्ति घेत्तव्वं । पज्जत्तएसु दीहाउएसु उप्पण्णो वि सव्वल-हुएण कालेण पज्जत्तीयो समाणेदि त्ति वुत्तं होदि । किमट्ठं एदाणि दो वि सुत्ताणि उच्चंति ? एयंताणुवड्ढिजोगे परिहरिय परिणामजोगग्गहणट्ठं ।ʼ

ʻजदा जदा आउअं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण बंधदि (क. प्र. २-७५.)।। १० ।ʼ

ʻअपज्जत्त-पज्जत्तुववादेयंताणुवड्ढिजोगाणं परिहरणट्ठमाउअबंधपाओग्गजहण्णपरिणाम-

< निष्फल होनेका प्रसंग आता है ।>

< अब इसी सूत्रमें गर्भित द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं--वह इस प्रकार है--दीर्घ आयुवाले पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवके आयुके दो भाग होते हैं एक पर्याप्तभाग और दूसरा अपर्याप्त भाग । सो यहां 'पर्याप्तकाल दीर्घ होते हैं' ऐसा कहनेपर क्षपितकर्मां-शिकके घोलमान और क्षपित गुणित घोलमान पर्याप्तकालोंसे गुणितकर्मांशिक जीवोंके पर्याप्तकाल दीर्घ होते हैं और उनके अपर्याप्तकालोंसे इसके अपर्याप्तकाल थोडे होते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । दीर्घ आयुवाले पर्याप्तोंमें उत्पन्न होकर भी सबसे अल्प काल द्वारा पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।>

< शंका---ये दोनों ही सूत्र किसलिये कहे जाते हैं ? >

< समाधान---एकान्तानुवृध्दियोंको छोडकर परिणामयोगोंका ग्रहण करनेके लिये उक्त दोनों सूत्र कहे गये हैं ।>

ʻजब जब आयुको बांधता है तब तब उसके योग्य जघन्य योगसे बांधता है ।। १० ।ʼ

< अपर्याप्त व पर्याप्त भवसम्बन्धी उपपाद और एकान्तानुवृध्दि योगोंका निषेध करनेके लिये तथा आयुबन्धके योग्य जघन्य परिणाम योगका ग्रहण करनेके लिये उसके>

ʿजोगग्गहणट्ठं च तप्पाओग्गजहण्णजोगग्गहणं कदं । कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि जाव तिस्से चरिमसमओ त्ति तावं गुणिदकम्मंसियपाओग्गाण जोगट्ठाणाणं (प्रतिषु ‘जोगट्ठाण’ इति पाठः।) पंत्तीए देसादिणियमेणावट्ठिदाए खग्गधारासरिसीए जहण्णुक्कस्सजोगा (प्रतिषु ‘जोगो’ इति पाठः।) अत्थि । तत्थ आउ-अबंधपाओग्गजहण्णजोगेहि चेव आउअं बंधदि त्ति उत्तं होदि ।ɹ

ʿकिमट्ठं जहण्णजोगेण चेव आउअं बंधाविज्जदे ? णाणावरणस्स उक्कस्ससंच-यट्ठं, ण अण्णहा उक्कस्ससंचओ । कुदो ? उक्कस्सजोगकाले आउए बंधाविदे जह-ण्णजोगेण आउअं बंधमाणस्स णाणावरणक्खयादो असंखेज्जगुणदव्वक्खयदंसणादो । एदमत्थं संदिट्ठीए जाणावेमो-एत्थ ताव छसत्तट्ठ रासीओ तिण्णि वि ओहट्टाविय एगरुवावसेसे सव्वभागहाराणमण्णोण्णब्भासे कदे णिरुध्दरासी उप्पज्जदि । तिस्से पमाणमट्ठसट्ठिसयं । १६८ । । एदं संदिट्ठीए जहण्णजोगागददव्वं बत्तीसरुवेहि । ३२ । उक्कस्सजोगगुणगारो त्ति कप्पिदेहि गुणिदे उक्कस्सदव्वं तेवण्णं छहत्तरिमेत्तियं (प्रतिषु ‘छाहत्तरिवेत्तियं’ इति पाठः।) होदि । ५३७६ । एत्थ सत्तविधबंधगस्स णाणावरणेण लध्ददव्वं (प्रतिषु ‘बध्ददव्त्रं’ इति पाठः।) सत्त--ɹ

< योग्य जघन्य योगका ग्रहण किया है । कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर उसके अन्तिम समय तक गुणितकर्मांशिक जीवके योग्य योगस्थानोंकी देशादिके नियमसे खड्गधाराके समान एक पंक्तिमें अवस्थित जघन्य व उत्कृष्ट दोनों प्रकारके योग पाये जाते हैं । उनमेंसे आयुबन्धके योग्य जघन्य योगोंसे ही आयुको बांधता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । >

< शंका--जघन्य योगसे ही आयुका बन्ध क्यों कराया जाता है ? >

< समाधान---ज्ञानावरणकर्मका उत्कृष्ट संचय करानेके लिये जघन्य योगसे ही आयुका बन्ध कराया जाता है, अन्यथा उत्कृष्ट संचय नहीं हो सकता । कारण कि उत्कृष्ट योगके कालमें आयुके बंधानेपर, जघन्य
योगसे आयुको बांधनेवालेके ज्ञानावरणद्रव्यका जो क्षय होता है उससे, असंख्यातगुणे द्रव्यका क्षय देखा जाता है । इसी अर्थको संदृष्टि द्वारा जतलाते हैं---यहां छह सात व आठ राशियां हैं, इन तीनोंको ही अपवर्तित कर एक रुपके शेष होनेपर समस्त भागहारोंका परस्पर गुणा करनेपर विवक्षित राशि उत्पन्न

होती है । उसका प्रमाण एक सौ अडसठ है । १६८ । । यह संदृष्टिमें जघन्य योगसे प्राप्त द्रव्य है । इसे उत्कृष्ट गुणकार रुपसे कल्पित बत्तीस । ३२ । रुपोंसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट द्रव्य तिरेपन सौ छयत्तर (१६८ x ३२ = ५३७६) होता है । यहां (आयुके विना) सात कर्मोको बांधनेवालेके ज्ञानावरण द्वारा प्राप्त द्रव्य सात सौ अडसठ (५३७६ / ७ =) >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

'सदट्ठसट्ठिमेत्तियं (अ-प्रतौ 'मेत्तेयं' इति पाठः।)। ७६८ ।। अट्ठविहबंधगस्स णाणावरणेण लध्ददव्वं छस्सदबाहत्तरि-मेत्तं, पुव्विल्ललध्ददव्वस्स अट्ठमभागक्खयादो । ६७२ । । हाणिपमाणं छण्णउदी । ९६ । । जहण्णजोगदव्वम्मि सत्तं बंधमाणस्स णाणावरणभागो चउबीस । २४ । । अट्ठं बंधमाणस्स णाणावरणभागो एक्कबीस । २१ ।, पुव्वदव्वस्स अट्ठमभागाभा--वादो । दोण्णमंतरं तिण्णि । एदमुक्कस्सदव्वस्स लध्दंतरम्मि सोहिदे संदिट्ठीए तिणउदी णाणावरणक्खओ होदि । ९३।। रुऊणुक्कस्सजोगगुणगारेण जहण्णजोग-दव्वक्खए गुणिदे जो रासी उप्पज्जदि, जोगं पडि एत्तियमेत्तदव्वपरिरक्खणट्ठमाउअं जहण्णजोगेण बंधाविदं । एदमपवादसुत्तं । तेण बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि त्ति एदस्स उस्सग्गसुत्तस्स बाहयं होदि । आउअबंधकालं मोत्तूण अण्णत्थ तं पयट्ठदि त्ति उत्तं होदि (प्रतिषु 'होहि' इति पाठः।)।'

'उवरिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदे (क.प्र. २-७५)।। ११ ।।'

< ७६८) मात्र है । आठ कर्मोको बांधनेवालेके ज्ञानावरण द्वारा प्राप्त हुआ द्रव्य छह सौ बहत्तर (५३७६ / ८ = ६७२) मात्र है, क्योंकि, यहां पूर्वके प्राप्त द्रव्यके आठवें भाग (७६८ / ८) का क्षय है । हानिका प्रमाण छयानबै (७६८ - ६७२ = ९६) है । जघन्य योग सम्बन्धी द्रव्यके रहते हुए सातको बांधनेवालेके ज्ञानावरणका भाग चौबीस (१६८ / ७ = २४) है । आठको बांधनेवालेके ज्ञानावरणका भाग इक्कीस (१६८ / ८ = २१) है, क्योंकि, यहां पूर्व द्रव्यके आठवें भाग (२४ / ८) का अभाव है । दोनोंका अन्तर तीन है । इसको उत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त हुए अन्तरमेंसे घटा देनेपर अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा तेरानबै अंक प्रमाण (९६ - ३ = ९३) ज्ञानावरणका क्षय होता है । एक कम उत्कृष्ट योगके गुणकारसे जघन्य योगके द्रव्यके

क्षयको गुणित करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है [(३२ - १) x ३ = ९३] योगकेप्रति इतने मात्र द्रव्यके रक्षणार्थ आयुको जघन्य योग द्वारा बंधाया है । >

< यह अपवादसूत्र है । इसलिये 'बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है' इस उत्सर्गसूत्रका वह बांधक है । आयुकेबन्धकालको छोडकर अन्यत्र वह सूत्र प्रवृत्त होता है, यह फलितार्थ है। >

ʿउपरिम स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद होता है । और अधस्तन स्थिति-योंके निषेकका जघन्य पद होता है ।। ११ ।।

वेयणामहाहियारे वेयणदव्वविहाणे सामित्तं

ʿउक्कस्सपदे उक्कस्सपदं जहण्णपदे जहण्णपदं त्ति वुत्तं होदि । खविदकम्मंसिय-खविद-गुणिद-घोलमाणाणं उक्कड्डुणादो एदस्स उक्कड्डुणा बहुगी । तेसिं चेव तिण्ण-मोकड्डुणादो एदेणोकड्डिज्जमाणदव्वं थोवं त्ति उत्तं होदि । गुणिदकम्मंसियओकड्डिज्ज-माणदव्वादो तेणेव उक्कड्डिज्जमाणदव्वं बहुगमिदि किण्ण भण्णदे ? ण, विसोहिअध्दाए तहाणुवलंभादो । एइंदिएसु णाणावरणुक्कस्सट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स तिण्णिसत्तभा-गमेत्तो । तेण बंधसमयादो एत्तियमेत्ते काले गदे पयदसमयपबध्दस्स सव्वे परमाणू परिसदंति । तदो णत्थि उक्कड्डुणाए पओजणमिदि ? ण, सागरोवमतिण्णिसत्तभाग-मेत्ते काले अदिक्कंते पयदसमयपबध्दस्स ण सव्वे कम्मक्खंधा गलंति, उक्कड्डुणाए वड्ढाविदट्ठिदिसंतत्तादो । तं पि कुदो णव्वदे ? बेसागरोवमसहस्सेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । जदि एवं तो अणंतकाल-

----

< 'उक्कस्सपदे' से 'उक्कस्सपदं' और 'जहण्णपदे' से 'जहण्णपदं' ऐसी प्रथमा विभक्तिका अभिप्राय है । क्षपितकर्मांशिक जीवके क्षपित घोलमान और गुणित घोलमान कर्मोंके उत्कर्षणसे इसका उत्कर्षण बहुत है । और उन्हीं तीनके अपकर्षणसे इसके द्वारा अपकर्षित किया जानेवाला द्रव्य थोडा है, यह उसका फलितार्थ है । >

< शंका---गुणितकर्मांशिकके अपकर्षणमाण द्रव्यसे उसके ही द्वारा उत्कर्षमाण द्रव्य बहुत है, ऐसा क्यों नहीं कहते ? >

< समाधान---नहीं, क्योंकि, विशुध्दिकालमें वैसा नहीं पाया जाता । >

< शंका---एकेन्द्रियोंमें ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग प्रमाण होता है । इसलिये बन्धसमयसे लेकर इतने कालके बीतनेपर प्रकृत समयप्रबध्दके सब परमाणु निर्जीर्ण हो जाते हैं । इस कारण प्रकृतमें ऐसे उत्कर्षणसे कुछ प्रयोजन नहीं है ? >

< समाधान---नहीं, सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग मात्र कालके बीतनेपर प्रकृत समयप्रबध्दके सब कर्मस्कन्ध नहीं गलते, क्योंकि, उत्कर्षण द्वारा उनका स्थिति-सत्त्व बढा लिया जाता है । >

< शंका---वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ? >

< समाधान--- 'दो हजार सागरोपमोंसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा' यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता, अत: जाना जाता है कि स्थितिसत्त्व बढा लिया जाता है । >

< शंका--- यदि ऐसा हो तो अनन्त काल तक उत्कर्षण कराकर संचयका क्यों नहीं >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʿमुक्कड्डाविय (अ-आ-का प्रतिषु 'मुक्कड्डणाविय' इति पाठः।) किण्ण संचओ घेप्पदे ? ण, कम्मक्खंधाणं तेत्तियमेत्तकालमुक्कड्डणस-त्तीए अभावादो । तं पि कुदो णव्वदे ? वत्तिकम्मट्ठिदिअणुसारिणी सत्तिकम्मट्ठिदि त्ति वयणादो । बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसं गदो त्ति सुत्तादो चेव ट्ठिदिबंधबहुत्तमुक्क-ड्डणाबहुत्तं च सिध्दं, तदो (अ-का-सप्रतिषु 'तदो तण्णिरत्थय', आप्रतौ 'तदो ताणिरत्थय' मप्रतौ 'तदो ण णिरत्थय'-इति पाठः।) णिरत्थयमिदं सुत्तमिदि ? होदि णिरत्थयं जदि कसाय-मेत्तमुक्कड्डणाए कारणं, किंतु तिव्वमिच्छत्तं (अ-प्रतौ 'मिच्छत्त' इति पाठः।) अरहंत-सिध्द-बहुसुदाइरियच्चासणा (पंचेव अत्थिकाया छज्जीवणिकाय महव्वया पंच । पवयणमाउ-पयत्था तेतीसच्चासणा भणिया ।। मूला. २, १८.) तिव्वकसाओ च उक्कड्डणाकारणं । तेण ण णिरत्थयमिदं सुत्तं।

ʿअधवा 'उवरिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स' एदस्स सुत्तस्स एवमत्थपरुवणा कायव्वा । तं जहा - बज्झमाणुक्कड्डिज्जमाणपदेसग्गं णिसिंचमाणो गुणिदकम्मंसिओ अंतरंगकारण-सहाओ पढमाए ट्ठिदीए थोवं णिसिंचदि, बिदियाए विसेसाहियं, तदियाए विसेसाहियं, एवं

< ग्रहण किया जाता ? >

< समाधान---नहीं, क्योंकि, कर्मस्कन्धोंकी उतने काल तक उत्कर्षणशक्तिका अभाव है । >

< शंका--- वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ? >

< समाधान-‘व्यक्त अवस्थाको प्राप्त हुई कर्मस्थिति और शक्तिरुप कर्मस्थितिका अनुसरण करनेवाली शक्ति रुप कर्मस्थिति होती है’ इस वचनसे जाना जाता है । >

< शंका--- ‘बहुत बहुत बार संक्लेशको प्राप्त हुआ’ इस सूत्रसे ही स्थिति-बन्धकी अधिकता और उत्कर्षणकी अधिकता सिध्द है, अत: यह सूत्र निरर्थक है ? >

< समाधान--- यदि कषाय मात्र ही उत्कर्षणका कारण होता तो वह सूत्र निरर्थक होता । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, तीव्र मिथ्यात्व व अरहंत, सिध्द, बहुश्रुत एवं आचार्यकी अत्यासना अर्थात् आसादना और तीव्र कषाय उत्कर्षणका कारण है । इस कारण यह सूत्र निरर्थक नहीं है । >

< अथवा ‘उपरिम स्थितियोंके निषेकका’ इस सूत्रके अर्थका इस प्रकार कथन करना चाहिये । यथा- बध्यमान और उत्कर्षमाण प्रदेशाग्रको निक्षिप्त करता हुआ गुणित-कर्मांशिक जीव अन्तरंग कारण वश प्रथम स्थितिमें थोडे प्रक्षिप्त करता हैं । द्वितीय स्थितिमें विशेष अधिक प्रक्षिप्त करता है । तृतीय स्थितिमें विशेष अधिक प्रक्षिप्त करता >